

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ साठ

दानियेल के अंतिम दर्शन का भविष्यवाणी-संबंधी महत्त्व: अंतिम दिनों के लिए सत्य का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-03-26

दसवें अध्याय में दानियेल की पहचान इस रूप में की गई है कि वह अनन्त सुसमाचार की तीन-चरणीय प्रक्रिया द्वारा शोक के दिनों से पुनर्जीवित किया गया है। फिर गब्रिएल दानियेल को ग्यारहवें अध्याय का भविष्यसूचक इतिहास प्रदान करता है, और इस प्रकार महान नदी हिद्देकेल के प्रकाश के इतिहास की पहचान कराता है।

परमेश्वर के वचन का कहीं अधिक गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है। विशेषकर दानियेल और प्रकाशितवाक्य पर वैसा ध्यान दिया जाना चाहिए जैसा हमारे कार्य के इतिहास में पहले कभी नहीं दिया गया। रोम की शक्ति और पोपाई व्यवस्था के संबंध में कुछ बातों में हमें कम कहना पड़ सकता है, पर हमें उस ओर ध्यान दिलाना चाहिए जो नबियों और प्रेरितों ने परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से लिखा है। पवित्र आत्मा ने, भविष्यवाणी के दिए जाने में और जिन घटनाओं का चित्रण किया गया है, दोनों में, बातों को इस प्रकार व्यवस्थित किया है कि यह सिखाया जाए कि मानवीय माध्यम को दृष्टि से दूर रखा जाए, वह मसीह में छिपा रहे, और स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर और उसकी व्यवस्था को उच्च ठहराया जाए।

दानियेल की पुस्तक पढ़ो। वहाँ प्रस्तुत राज्यों के इतिहास को बिंदुवार स्मरण करो। राजनेताओं, परिषदों, शक्तिशाली सेनाओं को देखो, और देखो कि कैसे परमेश्वर ने मनुष्यों के घमंड को नीचा किया और मानवीय महिमा को धूल में मिला दिया। केवल परमेश्वर ही महान के रूप में दिखाया गया है। भविष्यद्वक्ता के दर्शन में वह एक पराक्रमी शासक को गिराता और दूसरे को स्थापित करता हुआ दिखाई देता है। वह ब्रह्मांड के सम्राट के रूप में प्रकट होता है, जो अपना सनातन राज्य स्थापित करने ही वाला है—दिनों का प्राचीन, जीवित परमेश्वर, समस्त ज्ञान का स्रोत, वर्तमान का शासक, भविष्य को प्रकट करने वाला। पढ़ो और समझो कि दंभ में अपनी आत्मा को ऊँचा उठाने में मनुष्य कितना दीन, कितना दुर्बल, कितना क्षणभंगुर, कितना त्रुटिप्रवण, कितना दोषी है।

यशायाह के माध्यम से पवित्र आत्मा हमारा ध्यान परमेश्वर, जीवित परमेश्वर, की ओर—ध्यान के प्रमुख विषय के रूप में—मसीह में प्रकट हुए परमेश्वर की ओर—आकर्षित करता है। 'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुत्व उसके कंधे पर होगा; और उसका नाम अद्भुत, परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, शांति का राजकुमार कहलाएगा' [यशायाह 9:6]।

"जो प्रकाश दानियेल ने सीधे परमेश्वर से प्राप्त किया, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। ऊलै और हिद्देकेल, जो शिनार की महान नदियाँ हैं, के किनारों पर उसने जो दर्शन देखे, वे अब पूर्ण होने की प्रक्रिया में हैं, और जो भी घटनाएँ पूर्वकथित थीं वे शीघ्र ही घटित हो चुकी होंगी।" Manuscript Releases, खंड 16, 333, 334.

पवित्र आत्मा ने दानियेल के अंतिम दर्शन की भविष्यवाणी "और घटनाओं" के दिए जाने में "विषयों को इस प्रकार आकार दिया" कि प्रथम अध्याय (दस) परमेश्वर की प्रजा के अंतिम दिनों के अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि अंतिम अध्याय (बारह) भी करता है। उन तीन अध्यायों की रचना, जो हिद्देकेल नदी के प्रकाश को निर्मित करते हैं, जो "विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था," इस प्रकार अभिकल्पित की गई थी कि वह "सत्य" की त्रि-चरणीय परिभाषा को वहन करे। प्रथम का अंतिम के साथ सामंजस्य में होना, और मध्य का विद्रोह का प्रतिनिधित्व करना—इसमें हमारे सामने न केवल इब्रानी शब्द "सत्य" की संरचना उपस्थित होती है, जो इब्रानी वर्णमाला के प्रथम, तेरहवें और अंतिम अक्षर से निर्मित है, बल्कि हम अल्फा और ओमेगा की हस्ताक्षर-मुद्रा भी देखते हैं।

दानियेल का दसवाँ अध्याय उन एक लाख चवालीस हजार को चिन्हित करता है जो दो हजार पाँच सौ बीस वर्षों वाले 'chazon' दर्शन और दो हजार तीन सौ वर्षों वाले 'mareh' दर्शन—दोनों—को समझते हैं। वे न केवल इन दो दर्शनों को समझते हैं, बल्कि उनके पास विश्वास के द्वारा धर्मों ठहराए जाने का वह अनुभव भी है जो 'प्रकट होने' के स्त्रीलिंग और कारणवाची 'marah' दर्शन से उत्पन्न होता है।

मन और आत्मा के लिए, जैसे शरीर के लिए भी, परमेश्वर का यह नियम है कि शक्ति प्रयास से प्राप्त होती है। विकास अभ्यास से होता है। इस नियम के अनुरूप, परमेश्वर ने अपने वचन में मानसिक और आध्यात्मिक विकास के साधन प्रदान किए हैं।

बाइबल में वे सभी सिद्धांत हैं जिन्हें मनुष्यों को समझना चाहिए ताकि वे इस जीवन के लिए या आने वाले जीवन के लिए योग्य बन सकें। और इन सिद्धांतों को हर कोई समझ सकता है। जिसके भीतर उसकी शिक्षा की कद्र करने की भावना हो, वह बाइबल का एक भी अंश पढ़े और उससे कोई न कोई उपयोगी विचार पाए बिना नहीं रह सकता। परन्तु बाइबल की सबसे मूल्यवान शिक्षा कभी-कभार या असंबद्ध अध्ययन से नहीं मिलती। उसकी महान सत्य-प्रणाली इस प्रकार प्रस्तुत नहीं की गई है कि उतावले या लापरवाह पाठक उसे पहचान लें। उसके अनेक खजाने सतह से बहुत नीचे छिपे हैं, और वे केवल लगनपूर्ण शोध और निरंतर परिश्रम से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। जो सत्य मिलकर उस महान संपूर्णता का निर्माण करते हैं, उन्हें 'यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा' ढूँढ़कर इकट्ठा करना होगा। यशायाह 28:10.

जब इस प्रकार उन्हें खोजकर एकत्र किया जाएगा, तो वे एक-दूसरे के साथ पूर्णतः अनुरूप पाए जाएँगे। प्रत्येक सुसमाचार अन्य सुसमाचारों का पूरक है; हर भविष्यवाणी किसी अन्य की व्याख्या है; हर सत्य किसी अन्य सत्य का विकास है। सुसमाचार यहूदी व्यवस्था के पूर्वरूपों को स्पष्ट कर देता है। परमेश्वर के वचन में हर सिद्धांत का अपना स्थान है, हर तथ्य का अपना महत्व। और संपूर्ण संरचना, अपने विन्यास और निष्पादन में, अपने रचयिता की गवाही देती है। ऐसी संरचना की कल्पना या रचना अनन्त की बुद्धि के सिवा कोई नहीं कर सकता था।

विभिन्न भागों का अन्वेषण करने और उनके परस्पर संबंध का अध्ययन करने पर, मानव मन की सर्वोच्च क्षमताएँ तीव्र सक्रियता में आ जाती हैं। ऐसे अध्ययन में संलग्न होकर मानसिक शक्ति का विकास किए बिना कोई नहीं रह सकता।

बाइबल-अध्ययन का बौद्धिक महत्त्व केवल सत्य की खोज कर उसे एकत्र करने में ही नहीं है। यह उन विषयों को समझने के लिए आवश्यक प्रयास में भी निहित है जो उसमें प्रस्तुत किए गए हैं। जो मन केवल साधारण बातों में ही लगा रहता है, वह सिकुड़कर कमजोर पड़ जाता है। यदि उसे कभी महान और दूरगामी सत्यों को समझने का कार्य न दिया जाए, तो समय के साथ वह विकास की शक्ति खो देता है। इस अवनति से बचाव और विकास के लिए प्रेरणा के रूप में परमेश्वर के वचन के अध्ययन की बराबरी कोई और नहीं कर सकता। बौद्धिक प्रशिक्षण के साधन के रूप में बाइबल किसी भी अन्य पुस्तक से, बल्कि सब पुस्तकों को मिलाकर भी, अधिक प्रभावी है। इसके विषयों की महानता, इसकी उक्तियों की गरिमामय सरलता, इसके बिंबों की सुंदरता—ये सब विचारों को जिस प्रकार जागृत कर ऊँचा उठाती हैं, वैसा और कुछ नहीं कर सकता। दिव्य प्रकाशन के विराट सत्यों को समझने के प्रयास जितनी मानसिक शक्ति कोई अन्य अध्ययन नहीं दे सकता। इस प्रकार अनंत के विचारों से साक्षात्कार में आया मन अनिवार्यतः विस्तृत और सुदृढ़ हो जाता है।

और आध्यात्मिक प्रकृति के विकास में बाइबल की शक्ति और भी महान है। मनुष्य, जिसे परमेश्वर के साथ संगति के लिए रचा गया है, केवल ऐसी संगति में ही अपना वास्तविक जीवन और विकास पा सकता है। परमेश्वर में अपना सर्वोच्च आनंद पाने के लिए रचा गया, उसे और कहीं वह वस्तु नहीं मिल सकती जो हृदय की लालसाओं को शांत करे और आत्मा की भूख-प्यास को तृप्त करे। जो व्यक्ति निष्कपट और सीखने योग्य मन से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है, उसकी सच्चाइयों को समझने का प्रयत्न करता है, वह उसके लेखक के सान्निध्य में लाया जाएगा; और, उसकी अपनी इच्छा के अतिरिक्त, उसके विकास की संभावनाओं की कोई सीमा नहीं है।

अपनी शैली और विषयों की व्यापक विविधता में बाइबल में हर मन के लिए आकर्षण और हर हृदय को स्पर्श करने वाला कुछ न कुछ है। इसके पृष्ठों में सबसे प्राचीन इतिहास; जीवन के प्रति सर्वाधिक सच्ची जीवनियाँ; राज्य के नियंत्रण और गृहस्थी के विनियमन के लिए शासन-सिद्धांत—ऐसे सिद्धांत जिनकी बराबरी मानवीय बुद्धि ने कभी नहीं की—पाए जाते हैं। इसमें सबसे गहन दर्शन, और सबसे मधुर, सबसे उदात्त, सबसे भावावेशपूर्ण तथा सबसे करुणामय कविता निहित हैं। इस प्रकार विचार करने पर भी बाइबल की रचनाएँ मूल्य में किसी भी मानव लेखक की कृतियों से अपरिमेय रूप से श्रेष्ठ हैं; परंतु जब उन्हें उस महान केंद्रीय विचार के संबंध में देखा जाता है, तो उनका दायरा असीम रूप से व्यापक और उनका मूल्य असीम रूप से अधिक हो जाता है। इस विचार के प्रकाश में देखे जाने पर प्रत्येक विषय का नया महत्त्व होता है। सबसे सरल रूप में कही गई सच्चाइयों में भी ऐसे सिद्धांत निहित होते हैं जो स्वर्ग जितने ऊँचे हैं और जो अनंतकाल को अपने में समेट लेते हैं।

"बाइबल का केंद्रीय विषय, वह विषय जिसके इर्द-गिर्द पूरी पुस्तक के अन्य सभी विषय सिमटते हैं, उद्धार की योजना है—मानव आत्मा में परमेश्वर की छवि की पुनर्स्थापना। एदेन में उच्चारित किए गए वाक्य में आशा के प्रथम संकेत से लेकर प्रकाशितवाक्य की उस अंतिम महिमामय प्रतिज्ञा तक, 'वे उसका मुख देखेंगे; और उसका नाम उनके ललाटों पर होगा' (प्रकाशितवाक्य 22:4), बाइबल की हर पुस्तक और हर अंश का मुख्य संदेश इसी अद्भुत विषय का उद्घाटन है—मनुष्य का उत्थान—परमेश्वर की वह शक्ति, 'जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय देती है।' 1 कुरिन्थियों 15:57।" शिक्षा, 123-125.

अभी उद्भूत किए गए इस अंश में यह पहचाना गया है कि बाइबल, साहित्य के किसी भी दृष्टिकोण से विचार किए जाने पर, किसी भी मानवीय रचना से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। सिस्टर व्हाइट ने कहा, "इसके पृष्ठों में अत्यंत प्राचीन इतिहास मिलता है; जीवन के प्रति सर्वाधिक सत्यनिष्ठ जीवनी; राज्य के नियंत्रण के लिए, परिवार के संचालन के लिए शासन के ऐसे सिद्धांत—ऐसे सिद्धांत जिनकी मानवीय बुद्धि कभी बराबरी नहीं कर सकी। इसमें अत्यंत गहन दर्शन, अत्यंत मधुर और अत्यंत उदात्त कविता, अत्यंत आवेगपूर्ण और अत्यंत करुण रचनाएँ समाहित हैं," और यह कि "ऐसी रचना की कल्पना या गठन अनंतमय के मन के सिवा कोई और मन न कर सकता था।"

मानवता के वे सभी मान्य नियम, जो साहित्य को संरचना प्रदान करने वाले सिद्धांतों की पहचान करते हैं, बाइबल द्वारा अतिक्रमित हो जाते हैं। मानवता के विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत किए जाने वाले वे सिद्धांत, जो साधारण या निम्नतर साहित्य से लेकर मानव साहित्य की उत्कृष्टतम कृतियों तक के बीच के भेद को पहचानते हैं, वे सभी भी बाइबल द्वारा अतिक्रमित हो जाते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, यह पहचानना उचित है कि संपूर्ण बाइबल की भविष्यसूचक गवाही का चरमबिंदु, उसका महान निष्कर्ष, दानिय्येल के अंतिम दर्शन में निरूपित है। वही भविष्यसूचक गवाही का शिखर-पत्थर है, और मानव साहित्य में ऐसा कोई चरमोत्कर्ष नहीं जो दानिय्येल अध्याय ग्यारह की गवाही के निकट भी पहुँचता हो, जो पद एक से आरम्भ होकर अध्याय बारह पद चार तक निरंतर चलता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बाइबल की सारी पुस्तकें मिलती और समाप्त होती हैं, और प्रकाशितवाक्य में वही भविष्यवाणी की रेखाएँ उठाई गई हैं जो दानिय्येल की पुस्तक में हैं; परंतु एक-दूसरे के संदर्भ में दानिय्येल की पुस्तक प्रथम उल्लेख है, और प्रकाशितवाक्य अंतिम। सब कुछ प्रथम उल्लेख में निहित है, और सब कुछ दानिय्येल की पुस्तक में है, और उस पुस्तक का चरमोत्कर्ष हिंदेकेल नदी के किनारे दिया गया दर्शन है। उस दर्शन में दर्शाई गई घटनाओं का चरमोत्कर्ष पद चालीस से आरंभ होता है और अध्याय बारह के पद चार में पुस्तक पर मुहर लगने तक चलता है। वे पद प्राचीन पवित्र पुरुषों द्वारा, सिस्टर वाइट सहित, कभी कही या लिखी गई प्रत्येक भविष्यसूचक सत्य का भव्य समापन प्रस्तुत करते हैं।

अध्याय ग्यारह में उस निष्कर्ष तक पहुँचाने वाली बात, उसी अध्याय के भीतर के वे इतिहास-वृत्तांत हैं, जो अध्याय ग्यारह के अंतिम छह पदों की सही समझ के पक्ष में साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, जहाँ अजगर, पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता, ये तीन शत्रु, अब संसार को मानव अनुग्रहकाल के समापन की ओर ले जा रहे हैं। सिस्टर व्हाइट इस अंतर्निहित सिद्धांत की सीधे तौर पर पहचान करती हैं।

हमारे पास समय बर्बाद करने का समय नहीं है। हमारे सामने उथल-पुथल भरे समय हैं। संसार युद्ध की भावना से उद्वेलित है। शीघ्र ही वे विपत्तियाँ घटित होंगी जिनका उल्लेख भविष्यवाणियों में किया गया है। दानियेल के ग्यारहवें अध्याय की भविष्यवाणी लगभग अपनी पूरी पूर्ति तक पहुँच चुकी है। इस भविष्यवाणी की पूर्ति में जो इतिहास घटित हुआ है, उसका बहुत कुछ फिर से दोहराया जाएगा। तीसवें पद में एक शक्ति का उल्लेख है जो 'कुपित होगा, और लौटेगा, और पवित्र वाचा के विरुद्ध क्रोध करेगा; वह ऐसा ही करेगा; वह फिर लौटेगा, और उन लोगों के साथ गठजोड़ करेगा जिन्होंने पवित्र वाचा को छोड़ दिया है। और उसके पक्ष में सेनाएँ खड़ी होंगी, और वे दुर्ग के पवित्रस्थान को अशुद्ध करेंगी, और नित्य बलिदान को हटा देंगे, और उजाड़ करने वाली घृणित वस्तु को स्थापित करेंगे। और जो वाचा के विरुद्ध दुष्टता करेंगे उन्हें वह खुशामद से भ्रष्ट करेगा; परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर को जानते हैं वे दृढ़ रहेंगे और पराक्रम करेंगे। और लोगों में जो समझदार हैं वे बहुतों को शिक्षा देंगे; तौभी वे तलवार से, आग से, बंदीगिरी से और लूट से बहुत दिनों तक गिरेंगे। अब जब वे गिरेंगे, तो उन्हें थोड़ी सहायता मिलेगी; परन्तु बहुत से लोग खुशामद से उनके साथ जुड़ जाएंगे। और उनमें से कुछ समझदार भी गिरेंगे, ताकि उन्हें परखा जाए, और शुद्ध किया जाए, और उजला किया जाए, यहाँ तक कि अंत के समय तक; क्योंकि यह अभी एक ठहराए हुए समय के लिए है। और राजा अपनी इच्छा के अनुसार करेगा; और वह अपने आप को ऊँचा करेगा, और हर एक देवता से ऊपर अपने को महान ठहराएगा, और देवताओं के परमेश्वर के विरुद्ध अद्भुत बातें कहेगा, और रोष की बात पूरी होने तक सफल रहेगा; क्योंकि जो ठहराया गया है वही किया जाएगा।' दानियेल 11:30-36.

इन शब्दों में वर्णित बातों के समान घटनाएँ घटित होंगी। हमें इस बात के प्रमाण दिखाई देते हैं कि शैतान उन मनुष्यों के मन पर तेज़ी से अधिकार कर रहा है, जिनके हृदय में परमेश्वर का भय नहीं है। सब लोग इस पुस्तक की भविष्यवाणियों को पढ़ें और समझें, क्योंकि हम अब उस कष्ट के समय में प्रवेश कर रहे हैं जिसका उल्लेख किया गया है:

"और उस समय मीकाएल, वह महान् प्रधान सरदार जो तेरे लोगों के पुत्रों के लिये खड़ा रहता है, उठ खड़ा होगा; और ऐसा क्लेश का समय आएगा, जैसा कि राष्ट्र के होने से लेकर उस समय तक कभी नहीं हुआ; और उस समय तेरे लोग छुटकारा पाएँगे— वे सब जो पुस्तक में लिखे हुए पाए जाएँगे। और पृथ्वी की धूल में सोए हुए बहुत से लोग जाग उठेंगे; कुछ सदा के जीवन के लिये, और कुछ लज्जा और सदा के अपमान के लिये। और जो बुद्धिमान हैं वे आकाशमंडल की चमक के समान चमकेंगे; और जो बहुतों को धर्म की ओर फेरते हैं वे सदा और सर्वदा तारों के समान चमकेंगे। परन्तु तू, हे दानियेल, इन वचनों को बंद कर दे, और पुस्तक पर मुहर लगा दे, अन्तकाल तक; बहुत से लोग इधर-उधर दौड़ेंगे, और ज्ञान बढ़ेगा।" दानियेल 12:1-4।" मैनुस्क्रिप्ट रिलीज़ेस, संख्या 13, 394।

इस अंश में सिस्टर व्हाइट पहले दानियेल अध्याय ग्यारह का उल्लेख करती हैं और फिर इस सिद्धांत की पहचान करती हैं कि "इस भविष्यवाणी की पूर्ति में जो इतिहास घटित हो चुका है, उसका अधिकांश भाग पुनः दोहराया जाएगा।" इसके बाद वह सीधे पद तीस से छत्तीस तक उद्धृत करती हैं और इसके पश्चात यह कथन करती हैं कि, "इन शब्दों में वर्णित दृश्यों के समान दृश्य घटित होंगे।" पद तीस से छत्तीस की पहचान करने के बाद, और यह कहने के बाद कि उन पदों के समान दृश्य घटित होंगे, वह तब अनुग्रह-अवधि के समापन की ओर संकेत करती हैं, जब अध्याय बारह के पद एक में मीकाएल खड़ा होता है। ऐसा करते हुए, वह उन सात पदों को पृथक कर रही हैं, और उन्हें उस इतिहास में स्थापित कर रही हैं जो मीकाएल के खड़े होने से ठीक पहले घटित होता है।

हमने कई बार आयत 30 से 36 के इतिहास और यह कैसे दानियेल अध्याय 11 की आयत 40 से 45 के समानांतर चलता है, पर चर्चा की है, और अब हम अध्याय 11 में भविष्यवाणी के इतिहास के अन्य कालखंडों पर विचार करना शुरू करेंगे, जो उन अंतिम छह आयतों में दोहराए गए हैं। हालांकि, उससे पहले हम एक बार फिर आयत 30 से 36 और 40 से 45 के समानांतर का संक्षिप्त सार प्रस्तुत करेंगे।

तीसवीं आयत मूर्तिपूजक रोम से पोपीय रोम में संक्रमण को चिह्नित करती है। उस संक्रमणकालीन इतिहास का उल्लेख विभिन्न भविष्यद्वाणी संबंधी अंशों में किया गया है, जो 330, 508, 533 और 538 जैसे वर्षों की पहचान करते हैं। बाइबल की भविष्यद्वाणी के चौथे राज्य से पाँचवें राज्य में संक्रमण के दौरान अन्य भविष्यद्वाणी-सूचक भी हैं, परन्तु इकतीसवीं आयत में मूर्तिपूजक रोम पोपाई सत्ता के लिए खड़ा होता है, जैसा कि 496 ईस्वी में क्लोविस द्वारा निरूपित किया गया है। आयत में प्रारम्भ में क्लोविस द्वारा प्रतिनिधित्व की गई मूर्तिपूजक शक्तियाँ, 508 ईस्वी तक, पोपाई सत्ता के उदय के विरुद्ध किसी भी मूर्तिपूजक प्रतिरोध (नित्य) को हटाने का कार्य पूरा करती हैं। उन समयों का युद्ध उस इतिहास के दौरान रोम नगर के विरुद्ध विनाश लाता है, जिसका प्रतिनिधित्व “बल का पवित्रस्थान” द्वारा किया गया है; और 538 ईस्वी तक, मूर्तिपूजक शक्तियाँ पोपाई सत्ता को पृथ्वी के सिंहासन पर स्थापित कर देती हैं, और तब वह ऑर्लियाँ की परिषद में रविवार-संबंधी व्यवस्था पारित करती है।

बत्तीस से छत्तीस पद उस घातक युद्ध का संकेत देते हैं, जिसे तब पोपतंत्र ने अंधकारमय युगों के बारह सौ साठ वर्षों के दौरान परमेश्वर के विश्वासयोग्यों के विरुद्ध चलाया। अंततः छत्तीसवें पद में पोपतंत्र अपने अंत को पहुँचता है। चालीसवें पद में रीगन ने मसीह-विरोधी के साथ एक गुप्त गठबंधन स्थापित किया, जो इस बात को चिह्नित करता है कि प्रोटेस्टेंटवाद का प्रतिरोध हटा लिया गया था, जैसा कि 508 वर्ष द्वारा निरूपित किया गया है। रीगन की वित्तीय सहायता और सैन्य शक्ति के प्रति प्रतिबद्धता का पूर्वरूप 496 में पोपतंत्र के पक्ष में खड़े होने वाले “arms” द्वारा दर्शाया गया था। मूर्तिपूजक रोम के शक्ति-गर्भगृह का विनाश, जिसका प्रतिनिधित्व रोम नगर करता है, निकट आने वाले रविवार-कानून में संयुक्त राज्य के संविधान के विनाश का पूर्वरूप है, क्योंकि संविधान संयुक्त राज्य के लिए शक्ति का गर्भगृह है। रविवार-कानून के समय पोपतंत्र को एक बार फिर पृथ्वी के सिंहासन पर स्थापित किया जाएगा, जैसा कि 538 वर्ष द्वारा निरूपित किया गया है।

तब ईश्वर के विश्वासयोग्यों के विरुद्ध चलाए गए हत्यारे पापसी उत्पीड़न का अंतिम काल आरम्भ होगा, जैसा कि अंधकार युग में 538 से 1798 तक हुआ था। यह मानव परीक्षाकाल के समापन की ओर ले जाएगा, जब मीकाएल खड़ा होगा; इसका प्रतीक 1798 है—वह समय जब पापसी, जो बारह सौ साठ वर्षों तक फलती-फूलती रही थी, घातक घाव का कोप प्राप्त कर चुकी थी।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

एक अवसर पर, जब मैं न्यूयॉर्क शहर में था, रात्रि के समय मुझे आकाश की ओर मंज़िल पर मंज़िल उठती इमारतें देखने के लिए बुलाया गया। इन इमारतों के अग्निरोधी होने की गारंटी दी गई थी, और उन्हें उनके मालिकों और निर्माताओं की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए खड़ा किया गया था। ये इमारतें ऊँची और उससे भी ऊँची उठती गईं, और उनमें सबसे महँगी सामग्री का उपयोग किया गया। जिनके ये भवन थे, वे अपने आप से यह नहीं पूछ रहे थे: 'हम परमेश्वर की महिमा सर्वोत्तम रूप से कैसे करें?' प्रभु उनके विचारों में नहीं था।

"मैंने सोचा: 'हाय, काश जो लोग इस प्रकार अपने साधनों का निवेश कर रहे हैं, वे अपने मार्ग को कैसे देख पाते जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं! वे भव्य इमारतें खड़ी कर रहे हैं, पर ब्रह्मांड के शासक की दृष्टि में उनके मनसूबे और योजनाएँ कितनी मूर्खतापूर्ण हैं। वे हृदय और मन की सारी शक्तियों से यह नहीं विचार कर रहे कि वे परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकते हैं। वे इस बात को, जो मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है, भुला चुके हैं।'"

जब ये ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी हो रही थीं, तो मालिक महत्वाकांक्षी गर्व के साथ इस बात पर आनंदित थे कि उनके पास इतना धन है कि उसे अपने स्वार्थ की तृप्ति में और अपने पड़ोसियों में ईर्ष्या भड़काने में खर्च कर सकें। जिस धन को उन्होंने इस प्रकार लगा दिया, उसका बहुत-सा भाग ज़बरदस्ती की वसूली से, गरीबों को पिसाकर प्राप्त किया गया था। वे यह भूल गए कि स्वर्ग में हर व्यापारिक लेन-देन का लेखा रखा जाता है; हर अन्यायी सौदा, हर धोखाधड़ी वहाँ दर्ज होती है। समय आ रहा है जब अपने छल और उदंडता में मनुष्य ऐसी सीमा तक पहुँचेंगे जिसे प्रभु उन्हें पार करने नहीं देंगे, और वे जानेंगे कि यहोवा की सहनशीलता की भी एक सीमा है।

मेरे सामने जो अगला दृश्य आया, वह आग लगने की चेतावनी का था। लोगों ने ऊँची और कथित रूप से अग्निरोधक इमारतों को देखा और कहा: 'ये पूरी तरह सुरक्षित हैं।' लेकिन ये इमारतें ऐसे भस्म हो गईं मानो वे डामर से बनी हों। दमकल इंजन विनाश को रोकने के लिए कुछ न कर सके। दमकलकर्मी इंजनों को संचालित करने में असमर्थ थे।

मुझे यह बताया गया है कि जब प्रभु का समय आएगा, यदि घमंडी और महत्वाकांक्षी मनुष्यों के हृदयों में कोई परिवर्तन न हुआ हो, तो लोग पाएँगे कि जो हाथ बचाने में बलवान था, वही नाश करने में भी बलवान होगा। परमेश्वर के हाथ को कोई सांसारिक शक्ति रोक नहीं सकती। इमारतों के निर्माण में ऐसी कोई सामग्री उपयोग नहीं की जा सकती जो, परमेश्वर के निर्धारित समय पर, जब वह अपने नियम की अवहेलना और उनकी स्वार्थी महत्वाकांक्षा के कारण मनुष्यों को दंड देगा, उन इमारतों को विनाश से बचा सके।

शिक्षाविदों और राजनेताओं में भी ऐसे बहुत कम हैं जो समाज की वर्तमान स्थिति के अंतर्निहित कारणों को समझते हैं। जो शासन की बागडोर संभाले हुए हैं, वे नैतिक पतन, गरीबी, दरिद्रता और बढ़ते अपराध जैसी समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहे हैं। वे व्यावसायिक गतिविधियों को अधिक सुरक्षित आधार पर स्थापित करने के लिए व्यर्थ ही संघर्ष कर रहे हैं। यदि लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षा पर अधिक ध्यान दें, तो उन्हें उन समस्याओं का समाधान मिल जाता जो उन्हें उलझाती हैं।

पवित्र शास्त्र मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले संसार की स्थिति का वर्णन करता है। जो लोग लूट और उगाही के द्वारा बड़ी संपत्ति इकट्ठी कर रहे हैं, उनके विषय में लिखा है: 'तुमने अंतिम दिनों के लिए धन एकत्र कर रखा है। देखो, तुम्हारे खेतों की कटनी करने वाले मजदूरों की वह मजदूरी, जिसे तुमने धोखे से रोक रखा है, पुकार रही है; और कटनी करने वालों की पुकार सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच गई है। तुमने पृथ्वी पर ऐश किया और उच्छृंखल बने रहे; तुमने अपने हृदयों को वध के दिन के लिए मोटा किया है। तुमने धर्म को दोषी ठहराया और मार डाला; और वह तुम्हारा विरोध नहीं करता।' याकूब 5:3-6.

परन्तु समय के तेजी से पूरी होते जा रहे संकेतों द्वारा दी गई चेतावनियाँ कौन पढ़ता है? सांसारिक लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? उनके रवैये में क्या परिवर्तन दिखाई देता है? उतना ही, जितना नूहकालीन संसार के निवासियों के रवैये में देखा गया था—उससे अधिक नहीं। सांसारिक व्यवसाय और सुख-विलास में डूबे हुए, प्रलय-पूर्व के लोग "जब तक जलप्रलय आया और उन सबको बहाकर ले गया, तब तक जानते ही न थे।" मत्ती 24:39। उन्हें स्वर्ग से भेजी गई चेतावनियाँ मिली थीं, पर उन्होंने सुनना नहीं चाहा। और आज भी संसार, परमेश्वर की चेतावनी-भरी वाणी की बिलकुल परवाह किए बिना, शाश्वत विनाश की ओर तेजी से बढ़ा चला जा रहा है।

"संसार युद्ध की आत्मा से उद्वेलित है। दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय की भविष्यवाणी लगभग अपनी पूर्ण परिपूर्ति तक पहुँच चुकी है। शीघ्र ही वे संकट के दृश्य, जिनका उल्लेख भविष्यवाणियों में किया गया है, घटित होंगे।" टेस्टिमोनिज़, खंड 9, 12-14।